ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

KEY WORDS:

वर्तमान शिक्षा की स्थिति व शासकीय प्रयासो की भूमिका: (शिक्षा की गुणवत्ता के संदर्भ में)

डॉ सुरेन्द्र कुमार तिवारी प्राचार्य स्व. गुलाबबाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय,बोरवां (दे.अ.वि.वि.)

संगीता रणदिवे शोधार्थी,देवी अहिल्या विश्व विद्यालय इंदौर

ABSTRACT

प्रस्तुत आलेख में शिक्षा की वर्तमान स्थिति व शिक्षा की गुणवत्ता के संदर्भ में जो शासकीय प्रयास हो रहे उस पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया हैं। शिक्षा की गुणवत्ता का आकलन नैतिक विकास, मूल्यों, वर्तमान पाठ्यक्रम व शिक्षक असंतुष्टि के प्रभाव के संदर्भ में किया गया हैं। शिक्षा की गुणवत्ता में शासकीय प्रयासो की भूमिका पर सतही प्रकाश डाला गया हैं। सर्व शिक्षा अभियान मूल्यांकन रिपोर्ट से प्राप्त आकड़ों से शिक्षक असंतुष्टि का विद्यार्थियों के उपलब्धि पर प्रभाव पर प्रकाश डाला गया हैं।

भारत उच्च संस्कृति से परिपूर्ण राष्ट्र है,यहाँ हर धर्म, समाज में सभी स्थानों पर उच्च परम्परागत मूल्य विराजमान है। यह मुख्यत: ग्रंथों, साहित्यों, कहानियों, एवं लोक कथाओ के रूप में विद्यमान है। शिक्षा की गुणवत्ता के विकास में नैतिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक, व सामाजिक मूल्यों का योगदान अकल्पनीय है। लेकिन समाज में व्याप्त बुराइयाँ आज शिक्षा पर प्रश्न-चिन्ह लगा रही है। शिक्षा की गुणवत्ता पर सवाल उठ रहे हैं। समाज में दुर्व्यवहार व अनाचार व्याप्त हैं। यदि हम शिक्षा को साक्षरता से संबधित करे तो,लेकिन क्या यही साक्षरता है? जो अनाचार,भ्रष्टाचार व दुर्घटनाओं का बढावा दे रही है, और क्या यही शिक्षा का स्वरूप हैं? शायद नहीं, साक्षरता का शाब्दिक अर्थ हैं स+अक्षर अर्थात अक्षर ज्ञान ।साक्षर व्यक्ति अपना नाम लिख व पढ़ सके, लेकिन शिक्षा के मायने अलग हैं, हम समाज में फैली अराजकता के लिए शिक्षा को दोषी मान नहीं सकते हैं? क्योंकि शिक्षा सही व गलत की पहचान देती है। यदि हम भारतीय शिक्षा की गुणवत्ता पर विचार करे तो,भारतीय शिक्षा की गुणवत्ता तो संसार प्रसिद्ध रही है। भारतीय शिक्षा मे आधुनिकता व संस्कारों का एक सुंदर सम्मिश्रण हैं। बुनियादी शिक्षा, कोठारी शिक्षा आयोग आदि इसका प्रमाण हैं। अत: कहाँ हमे सुधार की आवश्यकता है? सुधार की आवश्यकता है,शिक्षा के क्षेत्र में। क्योंकि शिक्षा गुणवत्ता पूर्ण हैं, लेकिन शिक्षा को देने वाले साधन जो हैं, उसमें गुणवत्ता की आवश्यकता है, ताकि शिक्षा सही रूप में विद्यार्थियों तक पहुंचे।

भारत सरकार भी शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए निरंतर प्रयास कर रही है,उसी प्रयास के तहत २००१ सर्व शिक्षा अभियान, तथा २००९ में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान का शुभारंभ किया क्रमश: जिसके अंतर्गत प्राथमिक से लेकर माध्यमिक(उच्च व उच्चतर) तक के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जाए।

❖ शिक्षा की गुणवत्ता का आकलन :

शिक्षा की गुणवत्ता आकलन हम किस प्रकार करेंगे,यह एक कठिन समस्या हैं।-

गणितीय भाषा के अनुसार:

माना की x शिक्षा की गुणवत्ता, यदि हम जितनी शक्ति के साथ विद्यार्थियों के पास पहुचाए तो हमे परिणाम क्या प्राप्त होंगे ?

अवकलन के माध्यम से इसे समझने का प्रयास करते हैं,

d/dx x to the power 2 = २ x अर्थात यदि शिक्षा की गुणवत्ता दुगने प्रयास से दे, तो परिणाम भी हमे दुगना ही प्राप्त होगा। कहने का तात्पर्य हैं, कि गुणवत्ता में जितनी शक्ति होगी परिणाम उतना ही उत्तम होगा।

परंतु हम गुणवत्ता का आकलन कैसे करेंगे। शिक्षा की गुणवत्ता विद्यार्थियों के व्यवहार से ज्ञात होती है, और विद्यार्थियों का व्यवहार उनकी अभिव्यक्ति से ज्ञात होता है। यह अभिव्यक्ति कहानी, भाषा, संगीत, नाटक, कविता, श्लोक, साहित्य,आदि द्वारा व्यक्त होती है। इनके द्वारा विद्यार्थियों के नैतिक,आध्यात्मिक, बौद्धिक, व सामाजिक विकास किया जा सकता है। इनके द्वारा विद्यार्थियों की अभिलाषा को पहचाना जा सकता है, और यह जान सकते हैं, कि नैतिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक, व सामाजिक विकास में शिक्षा का कितना योगदान है । हम यह कह सकते हैं, कि इस विकास के लिए उत्तरदायी है, शिक्षा, शिक्षक की दक्षता, व पाठयक्रम की गुणवत्ता ।

विद्यार्थी की गुणवत्ता व शिक्षा की गुणवत्ता दोनों मुख्यत: आधारित होती है शिक्षक की अभिक्षमता पर। यदि शिक्षक प्रतिभाशाली, कौशलयुक्त, व अपने व्यवसाय के प्रति वचनबद्ध है,तों वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देगा ही। इसके लिए समय-समय पर उसको अपनी दक्षता का विकास करना आवश्यक है। समय के अनुसार चलना ही रीति है, शिक्षक स्वयं को समयानुसार परिवर्तित करेगा, तभी वह गुणवत्ता में सुधार लाएगा, वह भी उच्च परंपरागत मूल्यों के साथ, जो कि नैतिक विकास में सहायक हो।

❖ नैतिक विकास व शिक्षा की गुणवत्ता :-

यदि हम नैतिक मूल्यों के बारे में बात करे तों सर्वप्रथम है, एक अच्छे नागरिक के गुण। एक अच्छे नागरिक में क्या - क्या गुण होने चाहियें, सभी विद्वानों की राय अलग हो सकती है, लेकिन कुछ गुणों में सभी एकमत हो सकते हैं, जैसे सहयोग, सकारात्मकता, राष्ट्रप्रेम, बड़ों का आदर, संतुष्टि, सृजनात्मकता, विचार, जागरूकता। यदि सभी गुणों का विकास सही रूप में हो तों विद्यार्थियों में कुछ नया करने की चाह होती। वो जीवन के प्रति सकारात्मक होते हैं।

यदि हमें शिक्षा की गुणवत्ता का आकलन सरकार द्वारा चलाये जा रहे, अभियान के परिप्रेक्ष्य में देखना है, तों अभियान को निम्नतम हमें उसे पाँच साल का समय तों देना ही पड़ेगा। जैसे अभियान के प्रारंभ ९ वी से हैं, तों जो विद्यार्थी ९ वी में है, उसमें गुणों का विकास हमें १२ वी तक दिखने लगेगा। तब शिक्षा अभियान की सार्थकता स्पष्ट होगी। अत: हम कह

सकते हैं,कि १२वी में जो नैतिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक, व सामाजिक विकास होगा वह सर्वोत्तम होगा।

(सर्वोत्तम के लिए सभी विद्वानों की राय भिन्न भिन्न हो सकती है, यह तों शिक्षाविदों की राय के बाद ही निश्चित होगा की सर्वोत्तम गुण हम किसे मानते है।)

यदि हम नैतिक विकास का विश्लेषण करे तों जो कक्षा ९ वी में नैतिक विकास हुआ है, वह कक्षा ८वी तक की पुस्तके, शिक्षण विधि, शिक्षण कौशल आदि के कारण हो सकती है। उसी प्रकार कक्षा १० वी में जो विकास हो रहा है,वह 9वी तक जो विद्यार्थी ने पड़ा है, उसका प्रभाव है। क्रमश: ये आगे भी देखने को मिलेगा। मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों से भी इसकी पुष्टि की जा सकती है,कि एक विशेष आयु वर्ग में विद्यार्थी किस प्रकार व्यवहार करेगा उसका नैतिक विकास कैसा होना चाहिए। मनोवैज्ञानिक सिद्धांत अथक परिश्रम का फल है,जो की मनोवैज्ञानिक शोधों का परिमाण है । प्रयोगिक रूप से यह ज्ञात है, कि एक निश्चित आयु में विद्यार्थी कैसा व्यवहार करेंगे। समय के अनुसार मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों में बदलाव आया है,कि नहीं, यह तों शोध का विषय है, लेकिन नैतिक मूल्यों में समय के साथ व राष्ट्र की माँग के अनुसार परिवर्तित होते रहते है। इसलिए समय- समय पर पाठ्यक्रम में बदलाव की आवश्यकता होती है। मूल्यो व नैतिक विकास को अलग करना सरल नहीं हैं,लेकिन मूल्यों से अभिप्राय हैं,कि व्यक्ति किन शर्तों में कहाँ तक अपना जीवन सफलता पूर्वक निर्वाह कर सकता हैं। मूल्य व्यक्ति के विचारो पर निर्भर करते है। लेकिन उसमे उच्च नैतिकता का समावेश हो जाए जो व्यवहारिक भी हों तो समाज का उत्थान हो सकता हैं, तभी शिक्षा विद्यार्थियों के उचित विकास के लिए आवश्यक हैं। शिक्षा की गुणवत्ता मूल्यों के सापेक्ष होनी चाहिए।

❖ मूल्य व शिक्षा की गुणवत्ता :-

आजकल हम जो बच्चों में तेजी से बढ़ते विकास को देख रहे है, यह किस संदर्भ में देख रहे है। आज के बच्चों का मानसिक स्तर ऊँचा माना जाता है,क्यो? क्या बच्चों के मानसिक स्तर में बदलाव आया है ? प्रश्न यह है कि बच्चे तों बच्चे होते है , फिर बदलाव कैसा। परिवर्तन है, मूल्यों का, पहले शिक्षा का स्तर अलग था, दृष्टिकोण अलग था। शिक्षा के समाज व राष्ट्र के स्तर पर देखा गया, अब इसे वैश्विक स्तर पर देखा जा रहा है। अतः विद्यार्थियों के मूल्यों में बदलाव आया है।

इसी संदर्भ में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विकास के लिए राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान प्रयासरत है, यह प्रयास कितना साथर्क है ,यह तों विद्यार्थियों के व्यवहार, विचार तथा शिक्षक की कार्य कुशलता से ही ज्ञात होगा।

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान २००९ में प्रारम्भ हुआ, आज इसे लगभग ८ वर्ष हो चुके है, तों शिक्षा के स्तर व विद्यार्थियों के मूल्यों परिवर्तन तों आया ही होगा । इस परिवर्तन को हम किस प्रकार ज्ञात कर सकते है? विद्यार्थी अबोध मानें जा सकते हैं, उन पर जो प्रभाव दिखाता है,वह शिक्षा, समाज, माता-पिता,मित्रों व मनोरंजन के साधन का होता है।लेकिन मौलिकता सभी विद्यार्थियों में रहती है, वही मौलिकता को ज्ञात कर लिया जाए तों मूल्यों की पहचान कर सकेंगे।

जैसे हम पहले ही इंगित कर चुके हैं,कि मौलिकता उनके द्वारा सुनाई गई कहानियो, कविताओ, साहित्य वे जो पढ़ते है,भाषा जो प्रयुक्त करते है, मनोरंजन के साधन जो देखते है, उसमें झलकती है।यदि विद्यार्थी के हर व्यवहार में समान अभिव्यक्ति दिखाई देती है, तों यह उसकी मौलिकता है। उसकी अभिव्यक्तियों से स्पष्ट होता है,कि वह क्या करना चाहता है, उसकी अभिलाषा क्या है, तों मनोवैज्ञानिक भाषा में उसे प्रवाह (fluency) कहेंगे। अर्थात वह किस धारा में बह रहा हैं।यदि विद्यार्थी सही और गलत में अंतर कर सके तथा समय के अनुसार परिवर्तित हो सके, लेकिन सकारात्मक रूप से तों यह सृजनात्मकता होगी, और हम भावी पीड़ी से अपेक्षा भी यही हैं।

❖ पाठ्यक्रम व शिक्षा की गुणवत्ता:-

पाठ्यक्रम व शिक्षा की गुणवत्ता का आपसी सामंजस्य विद्यार्थी के विचारो से प्रदर्शित होता हैं। यदि विद्यार्थी सकारात्मक है, जीवन के प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति,व विश्व के प्रति तों शिक्षा अपना कार्य कर रही है, या यह कह सकते हैं,कि शिक्षा गुणवत्ता पूर्ण है व शिक्षक अपना कार्य कर रहे है,तथा शिक्षक के पास शिक्षा को पहुंचाने वाला माध्यम हैं, पाठ्यक्रम की उत्कृष्टता। लेकिन समाज में आज भी हम व्यभिचार देख रहे है,लोगो की सोच में परिवर्तन मध्यम गति से हो रहा है। विद्यार्थी के विचारो में परिवर्तन में पाठ्यक्रम अहम भूमिका निभाता हैं,पाठ्यक्रम का निर्माण बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा होता हैं। उनके द्वारा तय की गयी शिक्षा की नीति अनुकूलित पाठ्यक्रम की आधारशिला होती हैं। बुद्धिजीवियों व अन्य व्यक्तियों की सोच में थोड़ा अंतर हो सकता है। अंतर का कारण क्या ? शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन बुद्धिजीवियों वर्ग के कारण होता है।२०१६ में नई शिक्षा नीति बन गई है, उसका क्रियान्वयन होने जा रहा है। उसकी सफलता से ही ज्ञात होगा, कि क्या क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है? शिक्षा में जो भी परिवर्तन देखने को मिलता है, वह शिक्षाविदों के द्वारा ही होता है। नई शिक्षा नीति एक कठिन परीक्षा है। नीति के निर्माण में जिनका योगदान होगा वह अतुलनीय है, क्योंकि यह एक अग्नि परीक्षा की तरह होती है। राष्ट्र व जनता के उत्थान के लिए नीति का निर्माण होता है। नीति राष्ट्र को उत्थान या पतन की और ले जाती है।

विश्व में नार्वे एक ऐसा राष्ट्र है, जो मानव विकास (मानवीय मूल्यो) में प्रथम व शिक्षा में पांचवा स्थान है। क्या कारण हैं, कि नार्वे अग्रणी है, जबकि भारत विश्व के सबसे बड़े देशो (जनसंख्या व प्रतिभाओं के अनुसार) में गिना जाता है। नार्वे में एक खासियत है, सभी के लिए एक समान पाठ्यक्रम का होना। वहा केवल एक राज्य को छोड़ कर सभी जगह समान पाठ्यक्रम है।

हमारे यहाँ भी यह व्यवस्था अपनाने की और अग्रसर है, लेकिन सफलता के लिए कई बाते सोचनी पड़ेगी जैसे राष्ट्र, राज्यो से मिलकर बना है, और हर राज्य की अपनी पहचान व अपनी संस्कृति होती है, लेकिन नैतिक मूल्य तों एक समान होते है। पाठ्यक्रम का निर्माण,राज्य की आवश्यकता के अनुसार हो नैतिक मूल्य किस प्रकार से विद्यार्थियों को दिये जाए इस पर केंद्रण आवश्यक है। पाठ्यक्रम तों समान हो राष्ट्र के अनुसार हो लेकिन उसे देने का तरीका राज्य के अनुसार क्योंकि यदि हम कहते है, कि शिक्षा का स्तर सभी राज्यो में एक सामान नहीं है, तों उसे समान कैसे बनया जाए। ये तभी संभव है, जब हम शिक्षण विधि विद्यार्थियों के अनुसार रखेंगे। इससे शिक्षा में गुणवत्ता बढ़ेगी।

नैतिक विकास की बात करे तों नैतिक अभिवृत्ति का विकास किशोरवस्था में ही प्रारम्भ हो जाता है,जब वह विषय का चयन करता है,

तों उसकी वृत्ति झलकने लगती है, यह अलग है, कि विषय का चयन या तों वो स्वयं करता है, या किसी के प्रभाव में आकर करता है। प्रभाव कुछ भी हो, लेकिन नैतिक अभिवृत्ति की शुरुआत हो जाती है। ये शिक्षक पर निर्भर है, कि वह उसकी नैतिक वृत्ति को किस प्रकार बड़ा सकता है। वह शिक्षक की अभिक्षमता पर आधारित होता है,कि वह किस प्रकार विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का निखार सकता है।

मनोविज्ञान में बौद्धिक व नैतिक विकास के लिए कई सिद्धांत दिये गए। किशोरवस्था में किस प्रकार का बौद्धिक व नैतिक विकास होता है, जैसे प्याज़े, कोहलर का नैतिक विकास का सिद्धांत। बस आज की आवश्यकता के अनुसार उनमें थोड़ा परिवर्तन आवश्यक है, क्योंकि बच्चों के पास मानसिक विकास के बहुत से साधन है। अत: पाठ्यक्रम का निर्माण वर्तमान, व भविष्य की आवश्यकताओं के अनुसार होना चाहिए है। पाठ्यक्रम बालकेन्द्रित, समाजकेंद्रित, राष्ट्रकेंद्रित,(शिक्षा के उद्देश्यों के सापेक्ष) यदि देखा जाए,तों यह व्यक्तित्व के विकास के अनुसार होना चाहिए, प्राथमिक स्तर पर बालमनोविज्ञान के आधार पर,माध्यमिक स्तर पर अन्य उद्देश्यों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

एक उज्जवल राष्ट्र के लिए आवश्यक है, कि शिक्षा की गुणवत्ता श्रेष्ठ होना चाहिए साथ ही शिक्षा में गुणवत्ता होनी चाहिए,जो कि शिक्षण अभिक्षमता व पाठ्यक्रम गुणवत्ता पर आधारित है। अत: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में गुणवत्ता विकास के लिए एक उत्तम शिक्षण अभिक्षमता, पाठ्यक्रम गुणवत्ता आवश्यक है। एक उज्ज्वल राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा की गुणवत्ता उत्कृष्ट होना चाहिए, और इसके लिए शिक्षा में गुणवत्ता होनी चाहिए धीरे-धीरे प्रयास भी ही रहा हैं। यदि इस प्रयास में देश की प्रतिभाए योगदान दे, तों इससे उत्तम कोई बात नहीं हो सकती है। राष्ट्र का निर्माण व विकास प्रतिभाओं पर निर्भर करता हैं,यदि प्रतिभाओं को समय पर अपना योगदान दे,एक राष्ट्र के लिए इससे श्रेष्ठ क्या होगा?

❖ शिक्षक व शिक्षा की गुणवत्ता:-

राष्ट्र में शिक्षा का स्थान सर्वोपरि है। बिना शिक्षा गुणवत्ता के आप उस राष्ट्र का विकास की कल्पना भी नहीं कर सकते। भारत में शिक्षा का स्थान हमेंशा उच्च रहा है। यह उच्चता बनाए रखने कार्य एक उच्च शिक्षित व प्रशिक्षित शिक्षक कर सकता है,लेकिन समय के साथ साथ इसमें गिरावट आ रही है, कारण है, सोच में परिवर्तन। स्टेटस और पैसो की लालच में अच्छे खासे उच्च डिग्री धारी भी कायर और कमजोर होते जा रहे है । क्या आज की शिक्षा हिम्मत या ताकत देने के बजाए कमजोर इंसान बना रही ? यदि हम यहाँ मेंकाले की शिक्षा पद्धति की बात करे तों लगेगा, और कितने साल तक हम यह हंटर झलेंगे? लेकिन समाचारो को देखे तों लगेगा की सच्चाई आज भी बदली नहीं, उच्च शिक्षित व्यक्ति अपने विकास के लिए लोगों के भविष्य के साथ खेल कर रहे हैं, अपितु वह समाज के साथ खेल रहे हैं, स्वयं शिक्षा से संबधित क्षेत्र का ये हाल है,तों बाहरी क्षेत्र में तों देखना भी नहीं चाहिए। मान लीजिये कि पी.एचडी॰ धारी व्यक्ति भी अपने व्यवसाय से असन्तुष्ट मिले तो शिक्षा का रूप बदल जाता हैं।

देखा जाए तों शिक्षा वह नहीं होती, कि वो आप असंतुष्टि दे, बल्कि शिक्षा वह होती है,कि आप अपने आप से कहाँ तक संतुष्ट है। शिक्षा क्षेत्र का यह दुर्भाग्य होंगा, यदि ऐसे शिक्षित व्यक्ति हैं। शिक्षा गुणवत्ता पूर्ण तभी कही जाएंगी जब विद्यार्थी जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने में सक्षम हों। सर्वप्रथम व्यवसाय में संतुष्टि होनी चाहिए,विशेषत: शिक्षण व्यवसाय में यह सोच होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा में गुणवत्ता शिक्षक के बिना असंभव हैं,नहीं तों असंतुष्टि के कारण कई भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लग जाएगा। असंतुष्टि वह दीमक है, जो शिक्षा की गुणवत्ता को जड़ से खा रही हैं ।

सर्व शिक्षा अभियान पर २०१० में एक मूल्यांकन रिपोर्ट आई थी, रिपोर्ट में जो आकडे दिये है, उसे शिक्षक असंतुष्टि की नजर से थोड़ा समझने का प्रयास कर सकते हैं, यह मूल्यांकन रिपोर्ट ११ राज्यों में शहरी व ग्रामीण प्रतिदर्शो को कवर किया गया था ,13 कस्बों को भी SSA हस्तक्षेपों के आकलन के लिए गंदी बस्तियों में शहरी विद्यालयों को कवर किया गया है। इनमे से दो राज्यो के कुछ आकड़ों का विश्लेषण हैं, जो को निम्न प्रकार से हैं-

सारणी क्रमांक १: अध्यापको को गैर शिक्षण गतिविधियों और प्रेरणा स्तरो में शामिल करना

राज्य/यूटी	उन स्कूलो की % जिन्हे अध्यापको को गैर शिक्षण गतिविधियों में लगाया जाता है	उन स्कूलो की % जिन्हे अध्यापको को गैर शिक्षण गतिविधियों में के प्रति अनिच्छा रखते हैं।	उन स्कूलो की % जहां अध्यापको से पाठ्यक्रम तैयार करने में परामर्श लिया जाता हैं	उन स्कूलो की % जहां अध्यापको अपने वेतन से संतुष्ट हैं।
पश्चिम बंगाल	१००.०	३५.००	१०.०	**९०.०**
हरियाणा	९२.८	**८५.७१**	**७८.५**	**१४.३**

उपरोक्त दो राज्यो में उच्चतम व निम्नतम रूप से अध्यापक अपने वेतन से संतुष्ट हैं।

सारणी क्रमांक २.अध्यापक की उपस्थिती और दण्ड के बारे में छात्रो की प्रतिक्रियाए

राज्य/यूटी	उन छात्रो का % जिन्होने सूचित किया हैं,कि अध्यापक नियमित हैं।	उन छात्रो का % जिन्होने सूचित किया हैं,कि अध्यापक दण्ड देते हैं।
पश्चिम बंगाल	९६.३	११.३
हरियाणा	९७.०	९.६

- हरियाणा में ९७% अध्यापक नियमित हैं।जबकि पश्चिम बंगाल में ९६.३%अध्यापक नियमित है।
- **सारणी क्रमांक ३ पठन परीक्षण में छात्रो की उपलब्ध कक्षा २**

राज्य/यूटी	मौखिक (वर्णन) परीक्षण पूर्व सही उत्तर देने वाले छात्रो का %			पठन परीक्षण पूर्ण सही उत्तर देने वाले छात्रो का प्रतिशत		
	अँग्रेजी	स्थानीय भाषा	अंक	अँग्रेजी	स्थानीय भाषा	अंक
पश्चिम बंगाल	७८.०	६१.९	९३.२	**१०.१**	**७०.९**	९४.९
हरियाणा	८३.१	७८.९	९७.२	**१.८**	**४७.२**	९४.४

हरियाणा में अँग्रेजी पठन परीक्षण में छात्रो का प्रतिशत १.८ सही उत्तर देने में समर्थ थे,जबकि पश्चिम बंगाल १०.१% छात्रो का प्रतिशत था।

स्थानीय भाषा में हरियाणा ४७.२% तथा ७०.९% पश्चिम बंगाल के छात्रो ने सही उत्तर दिये।

❖ **सारणी क्रमांक ४ लिखित परीक्षा से छात्रो का निष्पादन कक्षा २**

राज्य/ यूटी	गणित		अँग्रेजी		स्थानीय भाषा	
	औसत अंक	भिन्नता कोएएफ	औसत अंक	भिन्नता कोएएफ	औसत अंक	भिन्नता कोएएफ
पश्चिम बंगाल	६९	४०	**५८**	४७	**८१**	३४
हरियाणा	५४	६३	**३५**	९५	**५७**	६६

अँग्रेजी के औसत अंक ५८ पश्चिम बंगाल,हरियाणा में ३५ औसत अंक हैं।

स्थानीय भाषा में औसत अंक हरियाणा के ५७ व पश्चिम बंगाल के ८१ थे।

❖ **सारणी क्रमांक ५ अपर प्राथमिक के छात्रो का लिखित परीक्षणों का निष्पादन कक्षा ६**

राज्य/ यूटी	गणित		स्थानीय भाषा				अँग्रेजी निबंध	
			निबंध		अनुच्छेद			
	औसत अंक	भिन्नता कोएएफ	औसत अंक	भिन्नता कोएएफ	औसत अंक	भिन्नता कोएएफ	औसत अंक	भिन्नता कोएएफ
पश्चिम बंगाल	५१	४२	९४	१४	**८७**	२९	५५	३२
हरियाणा	४६	६२	८७	२१	**६१**	३७	५०	५२

❖ स्थानीय भाषा के औसत अंक अनुच्छेद में ८७ पश्चिम बंगाल के तथा हरियाणा के ६१ थे।

सारणी क्रमांक ६ प्रति छात्र किया गया औसतन व्यय

राज्य/यूटी	प्रति छात्र किया गया औसत व्यय प्रति विद्यालय किया गया औसत व्यय (रूपय में)	
	२००३	२००७
पश्चिम बंगाल	**१९**	२८२
हरियाणा	**४२८**	७३८

❖ औसत व्यय पश्चिम बंगाल में प्रति छात्र (१९,282) तथा हरियाणा में (४२८,738)।

यदि अध्यापक वेतन संतुष्टि को छात्रो की उपलब्धि से देखने का प्रयास करे तो यह निष्कर्ष निकलेगा जहाँ अध्यापक वर्ग में संतुष्टि वहाँ परिणाम अच्छे हैं, अपेक्षा कृत जहां अध्यापक वर्ग में संतुष्टि नहीं हैं। अब प्रश्न यह हैं,कि शिक्षक संतुष्टि व छात्र उपलब्धि पर असर हो रहा है, जबकि छात्र पर किया गया औसत व्यय हरियाणा में अधिक हैं, तो अध्यापक संतुष्टि का पैमाना क्या हैं?शिक्षक को स्वयं में के कुछ मापदंड निश्चित करना चाहिए,असंतुष्टि के कारण विद्यार्थियों का नुकसान नहीं होना चाहिए।

शिक्षा केवल पुस्तकीय नहीं है, और विकास ग्रेड पर निर्भर नहीं करते हैं। शिक्षा विद्यार्थियों के विवेक का जाग्रत करने वाली होना चाहिए। एक उदाहरण से हम इसे समझने का प्रयास करेंगे। जैसे किसी व्यक्ति ने समायोजन पर पी. एचडी. की हो, और वह एक छोटी से संस्थान को न सँभाल पाये, तों शिक्षा का क्या महत्व? वैसे ही व्यक्ति में नैतिक मूल्यो की कमी है,उसे संस्थान को संभालने की ज़िम्मेदारी दी जाए है,तों भविष्य में कितनी कठिनाई का सामना करना पड़ता हैं। इस स्थिति में एक गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा कैसे मिलेंगी। शिक्षा इस प्रकार होनी चाहिए कि वह विद्यार्थियों के भविष्य को सँवारे स्वयं के विकास के साथ दूसरे का विकास भी सोंचे। वही सही रूप से शिक्षा हैं।

शिक्षा सही व गलत में अंतर बताती हैं । उच्च शिक्षा का मूल्य भी शून्य होता है, जब उच्च शिक्षित व्यक्ति भी द्वेष व लोभ से परिपूर्ण हों। जबकि शिक्षा द्वेष, ईर्ष्या, लोभ, लालच से मुक्ति देने का प्रयास, यही भारतीय शिक्षा की पहचान है। लेकिन भारतीय शिक्षा की पहचान है मूल्य, जो हम धीरे-धीरे खोते जा रहे हैं।

उपसंहार:

अत: हम कह सकते है,कि यदि शिक्षा में गुणवत्ता के लिए प्रयास करने हैं,तों उच्च स्थिति में आकर शिक्षक द्वारा नैतिक मूल्यों से समझौता नहीं करना चाहिए। यदि वह समझौता कर रहा हैं, शिक्षा की गुणवत्ता के बारे में एक बार फिर से सोचना चाहिए। वैसे शिक्षा के क्षेत्र में वही व्यक्ति आते हैं,जिन्हें नैतिक दायित्व व मूल्यों का एहसास होता है,पर अपवाद है, तों कमी ढूँढना आवश्यक है। हम वह समाज नही चाहिए जो पतन की और अग्रसर हो, अपितु हम ऐसे समाज की कल्पना करते है, जो उन्नतिशील होने के साथ संस्कृति से भी जुड़ा हो।

शिक्षक द्वारा यही आशा की जाती हैं,कि विद्यार्थी आसमान से आगे सोचे, क्योंकि यह आवश्यक भी है, यदि उसकी सोच आज आसमान से आगे न होती, तों हम ग्रहों और आकाशगंगाओं का पता नही लगा पाते। चूंकि भारतीयो से उत्तम मष्तिस्क मिलना संभव नहीं, इसका उदाहरण १२ भारतीय IITian मल्टी नेशनल कंपनी के कर्ता-दर्ता होना। ये गर्व की बात है, लेकिन जनसंख्या के अनुसार प्रतिशत थोड़ा कम है। यदि यह कमी शिक्षा में गुणवत्ता के कारण दूर होती हैं तो वैश्विक स्तर पर योगदान देने में हमारे राष्ट्र से उत्तम कोई नहीं।

संदर्भ :

1. पाल एच. आर. (2006). प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान . दिल्ली : हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय बैरक नं 2 एवं 4 .
२. सर्वशिक्षा अभियान - of Planning commission planningcommission.nic.in/reports/peoreport peoevalu/*peo_ssah.pdf*